ज्ञान सागर

(कक्षा-सातवीं)

प्रकाशन विभाग

डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति

चित्रगुप्त मार्ग, नयी दिल्ली-110055

विषय-सूची

क्रम संख्या	पाठ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	बारहमासा (कविता)	नारायण लाल परमार	1
2.	नाटक में नाटक (कहानी)	मंगल सक्सेना	6
3.	निर्मला, साँप और सयाल (कहानी)	सिगरुन श्रीवास्तव	15
4.	बातूनी (कहानी)	हरिशंकर परसाई	24
5.	*राजू का सपना (कहानी)	श्रीमती कमलेश	29
6.	समय (कविता)	डॉ. रामगोपाल वर्मा	32
7.	स्कूल की छुट्टियाँ (कहानी)	आर. के. नारायण	37
8.	एवरेस्ट की चुनौती (कहानी)	मेजर हरिपालसिंह अहलूवालिया	46
9.	सवाल का जवाब (कहानी)	हरिकृष्ण देवसरे	56
10.	*झंडा ऊँचा रहे हमारा (कविता)	श्यामलाल प्रसाद	64
11.	उस रात की बात (कहानी)	मिथिलेश्वर	65
12.	दोहे (पद्य)	–	72
13.	साहस को सलाम (डायरी)	–	76
14.	*एस. रामानुजन (जीवनी)	दिलीप मधुकर सालवी	82
15.	अन्नदाता कृषक (कविता)	पूरन चन्द्र काण्डपाल	87
16.	देशभक्त पुरु (नाटक)	प्रो. सी. जे. दासवाणी, डॉ. ओम प्रकाश सिंह	92
17.	काकी (कहानी)	सियारामशरण गुप्त	100
18.	बाल-लीला और कुंडलिया (पद्य)	–	107
19.	गणेशोत्सव (निबंध)	सविता जाजोदिया	110
20.	कर्मवीर (कविता)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	118

* केवल पढ़ने के लिए हैं। परीक्षा में इनमें से सवाल नहीं पूछे जाएँगे।

1

बारहमासा

चैत महीने का प्यारा,
सुंदर रूप **अनूप** है।
गरम हवा चलने लगती,
खट्मिट्ठी-सी धूप है।

आते ही बैसाख के,
छुट्टी हुई **मदरसों** की।
लगा गूँजने घर-आँगन,
किलकारी से बच्चों की।

कोई लगातार हारा,
लेकिन कोई जीत रहा।
तरह-तरह के खेलों में,
जेठ महीना बीत रहा।

काले-काले बादल भी,
नभ में चलें, दहाड़ के।
आँधी इतराने लगी,
लगते ही आषाढ़ के।

सावन की शोभा न्यारी,
हरियाली के ठाठ हैं।
नदी सरोवर छलक रहे,
डूब गए सब घाट हैं।

पता न चलता तारों का,
जाने कहा **मयंक** है।
झाँक नहीं पाता सूरज,
भादों का आतंक है।

शब्दार्थः **अनूप**–निराला, अति सुंदर; **मदरसा**–पाठशाला, विद्यालय; **मयंक**–चंद्रमा

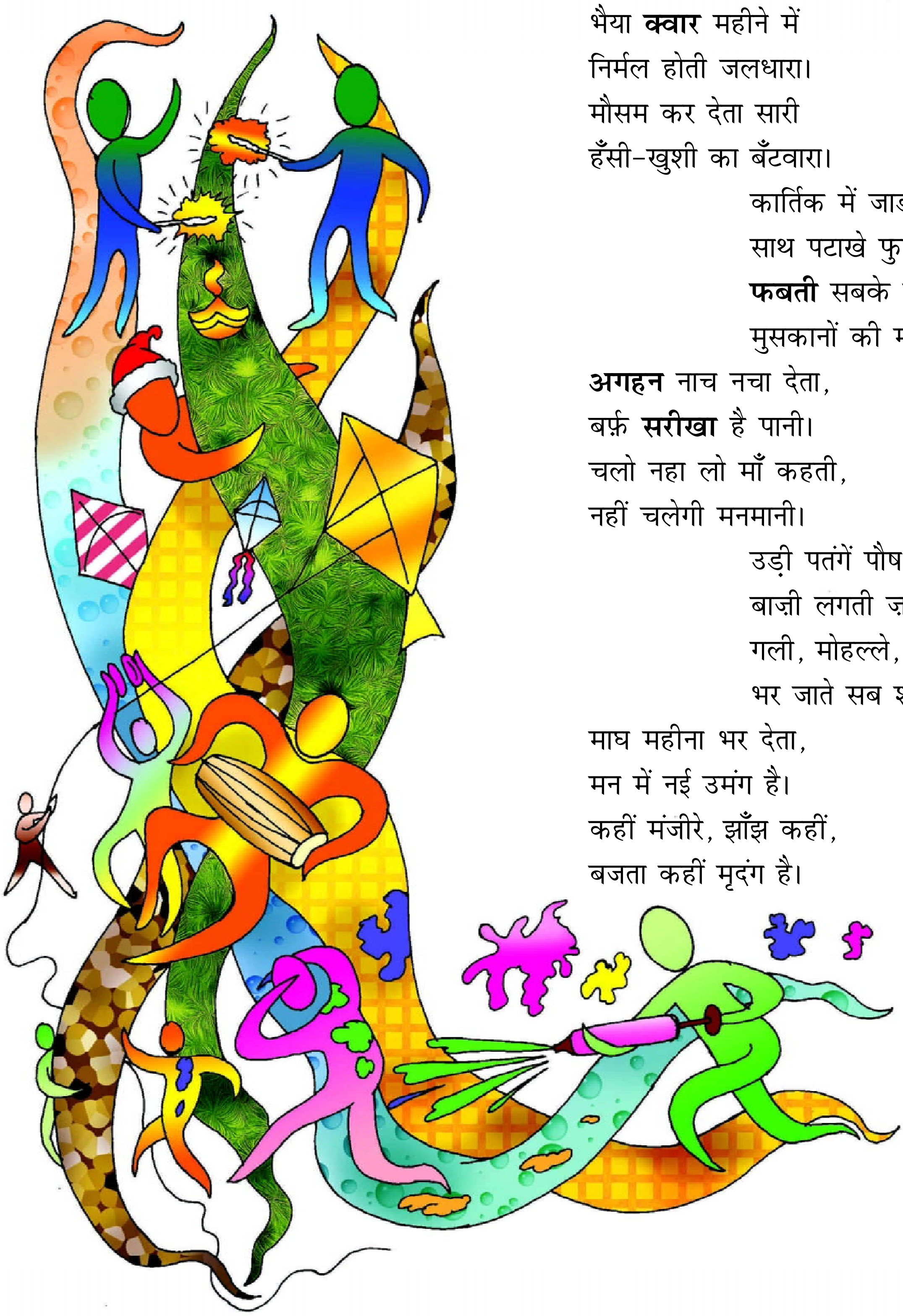

भैया **क्वार** महीने में
निर्मल होती जलधारा।
मौसम कर देता सारी
हँसी-खुशी का बँटवारा।

कार्तिक में जाड़ा आता,
साथ पटाखे फुलझड़ियाँ।
फबती सबके चेहरों पर,
मुसकानों की मधु लड़ियाँ।

अगहन नाच नचा देता,
बर्फ़ **सरीखा** है पानी।
चलो नहा लो माँ कहती,
नहीं चलेगी मनमानी।

उड़ी पतंगें पौष में,
बाज़ी लगती ज़ोर से।
गली, मोहल्ले, **अटारियाँ,**
भर जाते सब शोर से।

माघ महीना भर देता,
मन में नई उमंग है।
कहीं मंजीरे, झाँझ कहीं,
बजता कहीं मृदंग है।

लो वह आ पहुँचा फागुन,
रस की उड़ी फुहार है।
रंगों के कारण लगता
यह जीवन त्योहार है।

–नारायण लाल परमार

शब्दार्थ: क्वार–आश्विन का महीना; **फबना**–जँचना; **अगहन**–मार्गशीर्ष मास; **सरीखा**–जैसा, तरह; **अटारियाँ**–छतें

अभ्यास

कविता में से

1. भारतीय महीनों के नाम लिखिए।
2. वर्षा ऋतु में क्या-क्या होता है?
3. अगहन नाच क्यों नचा देता है?
4. **उचित उत्तर पर सही (Ö) का निशान लगाइए–**

(क) कौन-से महीने में बच्चों की किलकारी से घर-आँगन गूँजने लगता है?

☐ बैसाख ☐ चैत ☐ आषाढ़ ☐ कार्तिक

(ख) रंगों के कारण जीवन कैसा लगता है?

☐ अच्छा ☐ अनोखा ☐ त्योहार ☐ प्यारा

5. **कविता के आधार पर लिखिए कि दी गई चीज़ें/गतिविधियाँ किस महीने में होती हैं–**

चीज़ें/गतिविधियाँ	**महीने का नाम**
(क) आँधी आती है।	....
(ख) गरम हवा चलती है।	....
(ग) मदरसों की छुट्टी होती है।	....
(घ) नदी-सरोवर भर जाते हैं।	....
(ङ) जाड़ा आता है।	....
(च) पतंगें उड़ती हैं।	....
(छ) तरह-तरह के खेल खेले जाते हैं।	....

बातचीत के लिए

1. कविता की जिन पंक्तियों से पता चलता है कि सूरज और चाँद नज़र नहीं आते, उन्हें पढ़िए।
2. पतंगें उड़ाने के लिए बच्चे क्या-क्या करते हैं?
3. आपको कौन-सा महीना सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

अनुमान और कल्पना

1. दिए गए मौसमों में आप जो-जो करना पसंद करते हैं, उन्हें तालिका में लिखिए–

गरमी	सरदी	वर्षा	बसंत
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....
....	....	....	....

2. सभी ऋतुओं के नाम और प्रत्येक ऋतु में जिन वस्तुओं की बहुत आवश्यकता होती है, उनके बारे में बताइए।
3. 'भारत ऋतुओं का देश है'–इस विषय पर कक्षा में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए शब्दों के तुकांत शब्द लिखिए–

(क) जीत – .... (ख) प्यारा – ....

(ग) कहती – .... (घ) शोर – ....

2. कविता में से तीन व्यक्तिवाचक और तीन जातिवाचक संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए–

व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा
(क)	(क) ....
(ख)	(ख) ....
(ग)	(ग) ....

3. नीचे लिखे शब्दों को उलटा लिखकर नए सार्थक शब्द बनाइए–

(क) सब – ....बस........... (घ) रहा – ....

(ख) पता – .... (ङ) हवा – ....वाह...........

(ग) नदी – .... (च) नाच – ....

जीवन मूल्य

- एक वर्ष में महीनों का क्रम बदलने से वातावरण बदल जाता है।
- एक वर्ष के बारह महीने अपनी-अपनी विशेषता लिए आते हैं।

1. महीनों के बदलते क्रम से यह अहसास होता है कि परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है। कैसे?
2. महीनों की पहचान की तरह अपनी पहचान बनाने के लिए क्या करना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. भारत में मनाए जाने वाले किन्हीं पाँच त्योहारों के नाम व उनके मनाए जाने वाले महीनों के नाम लिखिए–

	त्योहार का नाम	महीने का नाम
(क)	....	....
(ख)	....	....
(ग)	....	....
(घ)	....	....
(ङ)	....	....

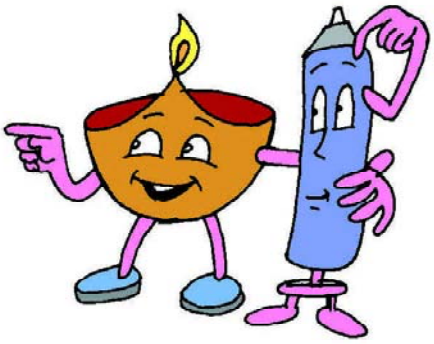

2. जो ऋतु आपको सबसे अच्छी लगती है, उस पर एक छोटी-सी कविता लिखिए–

....

....

....

....

....

....

....

....

2

नाटक में नाटक

राकेश का मन तो कह रहा था कि बिना पूरी तैयारी के नाटक नहीं खेलना चाहिए और जब नाटक में अभिनय करने वाले कलाकार भी नए हों, मंच पर आकर डर जाते हों, घबरा जाते हों और कुछ-कुछ बुद्धू भी हों तब तो अधूरी तैयारी से खेलना ही नहीं चाहिए। उसके साथी मोहन, सोहन और श्याम ऐसे ही थे। राकेश को उनके अभिनय पर बिलकुल भी विश्वास नहीं था। वह स्वयं अभिनय इसलिए नहीं कर रहा था, क्योंकि फुटबाल खेलते हुए वह अचानक गिर पड़ा था। उसके हाथ में चोट लग गई थी और हाथ को एक पट्टी में लपेटकर गर्दन के सहारे लटकाए रखना पड़ता था।

नाटक खेलना बहुत आवश्यक था। मोहल्ले की इज़्ज़त का सवाल था। मोहल्ले के बच्चों ने मिल-जुलकर फालतू पड़े एक छोटे-से सार्वजनिक मैदान में **दूब** व फूल-पौधे लगाए थे। वहीं एक मंच भी बना लिया था। राकेश की योग्यता पर सबको बहुत विश्वास भी था।

समय था—केवल एक सप्ताह का। सात दिन ऐसे निकल गए कि पता भी नहीं लगा! मोहन, सोहन और श्याम यूँ तो अच्छी तरह अभिनय करने लगे थे, पर राकेश को उनके बुद्धूपन से डर था। हर एक अपने को दूसरे से अधिक

शब्दार्थः दूब—घास

समझदार मानता था। इसलिए यह भूल जाता था कि वह कहाँ क्या कर रहा है—बस कहने से मतलब! दूसरे चाहे उनकी मूर्खतापूर्ण बातों पर हँस रहे हों, मगर वे पागलों की तरह आपस में ही उलझने लगते थे।

राकेश ने पूर्वाभ्यास के सात दिनों में उन्हें बहुत अच्छी तरह समझाया था। निर्देशन उसने इतना अच्छा दिया था कि छोटी-से-छोटी और साधारण-से-साधारण बात भी समझ में आ जाए।

खैर, **प्रदर्शन** का दिन और समय भी आ गया। राकेश साज-सज्जा कक्ष में खड़ा सबको खास-खास हिदायतें फिर से दे रहा था।

मोहन बोला, ''मेरा दिल तो बहुत ज़ोरों से धड़क रहा है।''

''मेरा भी,'' सोहन ने सीने पर हाथ रखकर कहा।

''तुम लोग पानी पियो और मन को साहसी बनाओ,'' राकेश ने फिर हिम्मत बढ़ाई।

जैसे-तैसे अभी तक तो ठीक-ठाक हो गया। अभिनेता मंच पर आ गए। पर्दा उठा।

मोहन बना था—चित्रकार और सोहन बना था—उर्दू का शायर। नाटक में दोनों दोस्त होते हैं। चित्रकार कहता है—उसकी कला महान, शायर कहता है—उसकी कला महान! श्याम बनता है—संगीतकार।

वह उनसे मुलाकात करने उस स्थान पर आता है, जहाँ वे यह बहस कर रहे हैं। बजाय इसके कि वह नए-नए मित्रों से मधुर बातें करे, बड़े-छोटे के इस विवाद में उलझ जाता है। वह कहता है—संगीतकार की कला महान!

अभी तक अभिनय अच्छी तरह चल रहा था। सबको अपना-अपना **'पार्ट'** याद आ रहा था। सब ठीक-ठीक अभिनय करते चले जा रहे थे। अचानक श्याम अपना पार्ट भूल गया।

शब्दार्थः प्रदर्शन—दिखाना, नाटक को मंच पर करना; **पार्ट**—हिस्सा, भूमिका

पर्दे की **आड़** में राकेश स्वयं पूरा लिखित नाटक लिए खड़ा था। वह हर नए संवाद का पहला शब्द बोल रहा था ताकि कलाकारों को संवाद याद आते रहें।

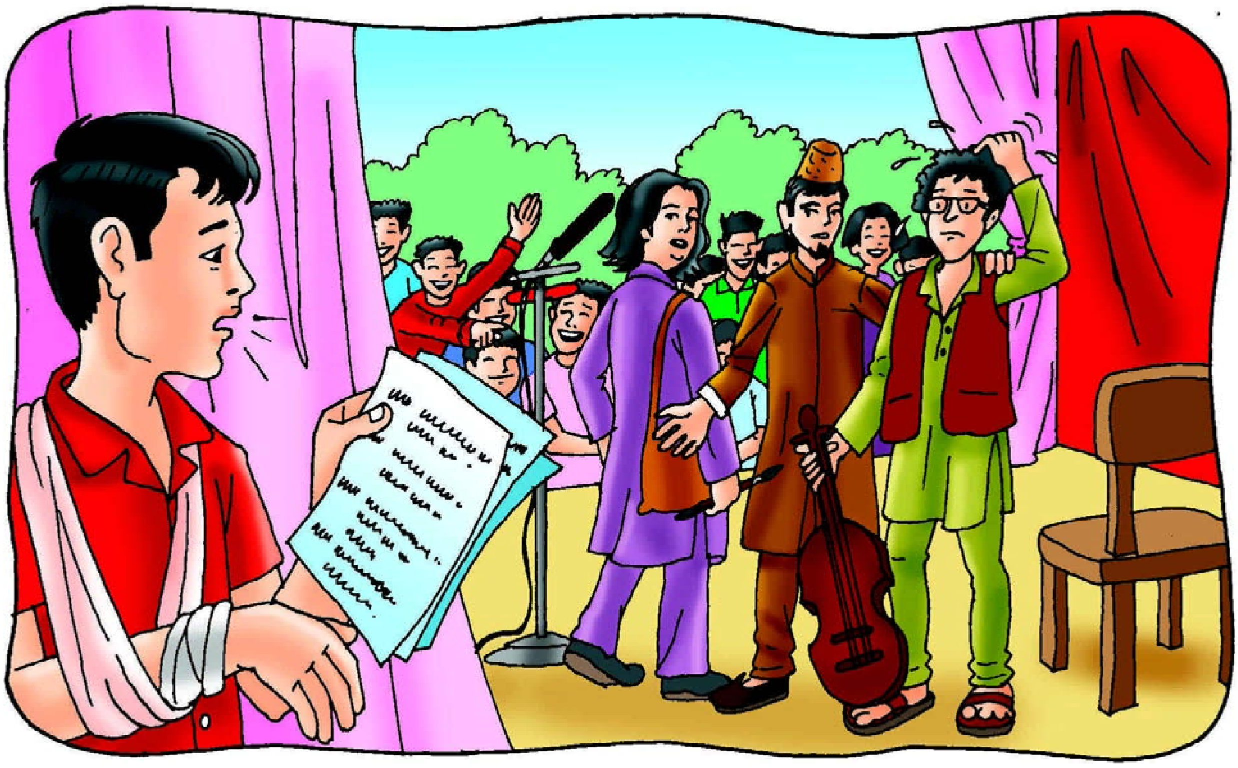

मगर श्याम घबरा गया। वह सहसा चुप हो गया। उसके चुप होने से चित्रकार और शायर महोदय भी चुप हो गए। होना यह चाहिए था कि वे दोनों कोई बात मन से ही बनाकर बात आगे बढ़ा देते, पर वे घबराकर राकेश की तरफ़ देखने लगे। संगीतकार महोदय भी पलटकर राकेश की ओर देखने लगे।

राकेश बार-बार संगीतकार जी का संवाद बोल रहा था मगर आवाज़ तेज़ होकर 'माइक' से सबको न सुनाई दे जाए, इसलिए धीरे-धीरे फुसफुसाकर बोल रहा था। संगीतकार जी को वह हल्की आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी।

तभी शायर साहब संगीतकार के कंधे पर हाथ मारकर बोले, ''उधर जाकर सुन ले न।'' संगीतकार जी अपना वायलिन पकड़े-पकड़े राकेश की ओर खिसक आए!

दर्शक **ठठाकर हँस** पड़े। संगीतकार जी और घबरा गए। जो कुछ सुनाई पड़ा उसे ही बिना समझे-बूझे झट-से बोलने लगे।

संवाद था—''जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुग्ध हो जाते हैं, शायर साहब! आप क्या समझते हैं संगीत को?''

मगर संगीतकार साहब बोल गए यों—''जब संगीत की स्वर-लहरी गूँजती है तो पशु-पक्षी तक मुँह की खा जाते हैं, गाजर साहब! आप क्या समझते हैं हमें?''

शब्दार्थः आड़–(पर्दे के) पीछे; **ठठाकर हँसना**–ज़ोर से हँसना

शायर साहब **तपाक** से बोले, ''तुम्हारा सर! गाजर साहब हूँ मैं?''

दर्शक फिर ठठाकर हँस पड़े।

चित्रकार महोदय ने मंच पर सूझ और अक्लमंदी दिखाने की कोशिश की—''इनका मतलब है आपकी शायरी गाजर-मूली है और आप गाजर साहब हैं! सो इनकी कला महान है। मगर मेरी कला इनसे भी महान है।''

राकेश दाँत पीस रहा था। उसकी सारी मेहनत पर पानी पड़ गया था। पर इस तरह बात सँभलते देखकर वह कुछ शांत हुआ।

इस बार शायर साहब बुद्धूपन दिखा बैठे।

गुस्सा होकर बोले, ''तूने भी गलत बोल दिया। मुझे गाजर साहब कहने की बात थी क्या? और मेरी शायरी गाजर-मूली है तो तेरी चित्रकला झाड़ू फेरना है, पोतना है, पालिश करना है, **झख मारना** है!''

चित्रकार महोदय ने हाथ उठाकर कहा, ''देख, मुँह सँभालकर बोल!''

दर्शक फिर ज़ोर से हँस पड़े।

राकेश घबरा रहा था। गुस्सा भी आ रहा था उसे और रोना भी। सारी इज़्ज़त मिट्टी में मिल गई। पर अब क्या हो? वह बार-बार दोनों हथेलियों को मसल रहा था और कोई तरकीब सोच रहा था।

शब्दार्थः तपाक—झट से; **झख मारना**—बेकार के कामों में समय व्यतीत करना

इधर मंच पर तीनों में ज़ोरों से तू-तू मैं-मैं हो रही थी। चित्रकार महोदय हाथ में कूँची पकड़े, आँखें नचा-नचाकर, मटक-मटककर बोल रहे थे–

"अरे चमगादड़ तुझे क्या खाक शायरी करना आता है! ज़बरदस्ती ही तुझे यह पार्ट दे दिया। तूने सारा गड़बड़ कर दिया।"

"मुझे चमगादड़ कहता है? अबे **करमकल्ले**, आलूबुखारे, शायरी तो मेरी बातों से टपकती है। तूने कभी 'टूथ-ब्रुश' के अलावा भी कोई ब्रुश उठाया है? यहाँ चित्रकार बना दिया तो सचमुच ही अपने को चित्रकार समझ बैठा।"

दर्शक हँसी से लोट-पोट हुए जा रहे थे। संगीतकार महोदय कभी उन दोनों लड़ते हुओं की ओर हाथ नचाते, कभी दर्शकों की ओर।

तभी तेज़ी से राकेश मंच पर पहुँच गया। सब चुप हो गए, **सकपका** गए। राकेश एक कुर्सी पर बैठते हुए बोला–"आज मुझे अस्पताल में हाथ पर पट्टी बँधवाने में देर हो गई तो तुमने इस तरह 'रिहर्सल' की है! ज़ोर-ज़ोर से लड़ने लगे! अभिनय का दिन बिलकुल पास आ गया है और हमारी तैयारी का यह हाल है!"

चित्रकार महोदय ने इस समय अक्लमंदी दिखाई। बोले, "हम क्या करें डायरेक्टर साहब? पहले इसी ने गलती की!"

शब्दार्थ: करमकल्ले–गाँठ गोभी; **सकपका जाना**–घबरा जाना

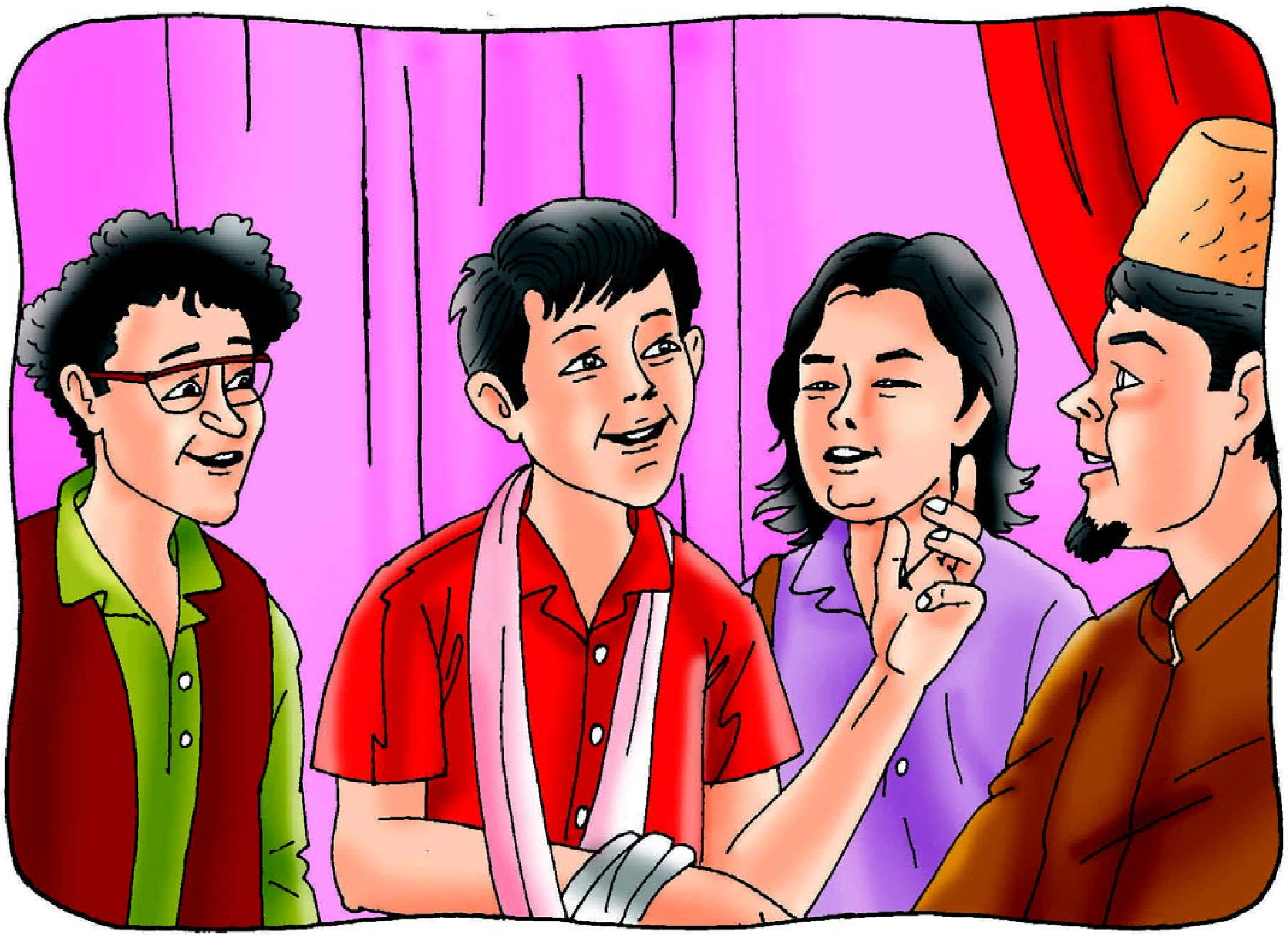

राकेश बात काटकर बोला, ''अरे तो मैंने कह नहीं दिया था कि रिहर्सल में भी यह मानकर चलो कि दर्शक सामने ही बैठे हैं? अगर गलती हो गई थी तो वहीं से दोबारा रिहर्सल शुरू कर देते। यह क्या कि लड़ने लगे! सब गड़बड़ हो गया। सब गड़बड़ करते हो।''

बात राकेश ने बहुत सँभाल ली थी। पर्दे की आड़ में खड़े अन्य साथी मन-ही-मन राकेश की तुरंत-बुद्धि की प्रशंसा कर रहे थे। सब दर्शक शांत थे, **भौंचक्के** थे। वे सोच रहे थे यह क्या हो गया! वे तो समझ रहे थे कि नाटक बिगड़ गया, मगर यहाँ तो नाटक में ही नाटक था। उसका रिहर्सल ही नाटक था। मानो इस नाटक में नाटक की तैयारी की कठिनाइयों और कमज़ोरियों को ही दिखाया गया था!

राकेश कह रहा था, ''देखिए, हमारे नाटक का नाम है–'बड़ा कलाकार' और बड़ा कलाकार वह है, जो दूसरे की **त्रुटियों** को नहीं अपनी त्रुटियों को देखे और सुधारे। आइए, अब हम फिर से 'रिहर्सल' शुरू करते हैं।''

तभी राकेश के इशारे पर पर्दा गिर गया। दर्शक नाटक की **भूरि-भूरि प्रशंसा** करते हुए अपने घर चले गए।

–मंगल सक्सेना

शब्दार्थः भौंचक्के–हैरान; **त्रुटियाँ**–गलतियाँ; **भूरि-भूरि प्रशंसा करना**–बहुत तारीफ़ करना

अभ्यास

पाठ में से

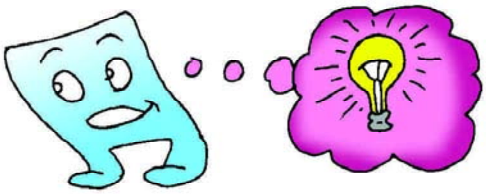

1. राकेश ने नाटक में स्वयं अभिनय क्यों नहीं किया?
2. राकेश के साथी अभिनय के मामले में कैसे थे?
3. राकेश ने प्रदर्शन के दिन सभी को खास-खास हिदायतें फिर से क्यों दीं?
4. राकेश ने नाटक को किस प्रकार सँभाला?
5. इस कहानी के लिए कोई अन्य शीर्षक बताते हुए उसके चुनाव का कारण भी बताइए।

6. नीचे दिए गए कथन किसने कहे, किससे कहे–

कथन	किसने कहा	किससे कहा
(क) मेरा दिल तो बहुत ज़ोरों से धड़क रहा है।	....	....
(ख) तुम लोग पानी पियो और मन को साहसी बनाओ।	....	....
(ग) गाजर साहब! आप क्या समझते हैं हमें?	....	....

7. कहानी के आधार पर नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। सही कथनों पर सही (Ö) का और गलत कथनों पर गलत (×) का चिह्न लगाइए। गलत कथन को सही करके दोबारा कॉपी में लिखिए–

(क) राकेश ने नाटक का निर्देशन किया था। ☐
(ख) राकेश के साथी अभिनय के मामले में नए थे। ☐
(ग) राकेश को उनके अभिनय पर पूरा भरोसा था। ☐
(घ) मोहन चित्रकार बना था। ☐
(ङ) राकेश हाथ पर पट्टी बँधवाने के लिए अस्पताल चला गया था। ☐
(च) नाटक का नाम था–बड़ा कलाकार। ☐
(छ) नाटक को बिगड़ता देख दर्शक ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। ☐
(ज) नाटक का रिहर्सल ही नाटक था। ☐
(झ) सोहन अपना संवाद भूल गया था। ☐
(ञ) राकेश ने मंच पर आकर नाटक को सँभाला। ☐

बातचीत के लिए

1. राकेश को अपने साथियों के किस बुद्धूपन से डर था?
2. क्या आपने कभी नाटक में हिस्सा लिया है? नाटक के मंचन से जुड़ी कोई रोचक घटना बताइए।

अनुमान और कल्पना

1. अगर श्याम अपना संवाद नहीं भूलता तो कहानी कैसे आगे बढ़ती, बताइए।
2. राकेश की जगह यदि आप होते तो नाटक कैसे सँभालते?

भाषा की बात

1. नीचे दिए गए शब्दों को शब्द-कोश के क्रमानुसार लिखिए–

पट्टी, मंच, सार्वजनिक, सप्ताह, पूर्वाभ्यास, पर्दा, स्वयं, संवाद, प्रशंसा, त्रुटि।

....	....	....	....	....
1	2	3	4	5
....	....	....	....	....
6	7	8	9	10

2. पाठ में आए इन युग्म-शब्दों को पूरा कीजिए–

(क) स्वर – .... (घ) साज – ....

(ख) फूल – .... (ङ) लोट – ....

(ग) जैसे – .... (च) पशु – ....

3. नीचे दिए गए शब्दों में से नए शब्द बनाकर लिखिए–

(क) मूर्खतापूर्ण ......मूर्ख...... ....

(ख) साधारण ....

(ग) संगीतकार ....

(घ) बनाकर ....

(ङ) कलाकार ....कला...... ....

जीवन मूल्य

- राकेश अपने साथियों की मूर्खता के कारण घबरा रहा था। उसे गुस्सा भी आ रहा था और रोना भी।
  1. क्या हम रोकर, घबराकर या गुस्से में किसी मुश्किल परिस्थिति का सामना कर सकते हैं? क्यों?
  2. गुस्से या क्रोध को शांत करने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. **नीचे दिए गए संवादों को अभिनय के साथ बोलिए–**

   (क) देख, मुँह सँभालकर बोल।

   (ख) ओफ! मेरे सिर पर क्यों चढ़े आ रहे हो?

   (ग) हे भगवान! न जाने मेरी बेटी कब ठीक होगी?

   (घ) भई वाह! यह तो अच्छी रही।
2. कहानी 'नाटक में नाटक' को नाटक रूप में खेलने के लिए किस-किस सामान की ज़रूरत होगी? उस सामान की एक सूची बनाइए।
3. 'नाटक में नाटक' शीर्षक कहानी का विद्यालय-मंच पर मंचन कीजिए।

3

निर्मला, साँप और सयाल

निर्मला को अपनी सहेलियों में सयाल लहनू भाई भोया बहुत बुरी लगती थी। सयाल के पिता का नाम लहनू भाई भोया था। सयाल के व्यवहार और गुणों की सभी प्रशंसा करते थे। निर्मला भला सयाल की तारीफ़ कैसे सह पाती! लोग सयाल की माँ से कहते–''कलगी बेन, तुम्हारी लाडली बड़ी होनहार है। उसकी प्यारी-सी मुसकान सबको खुश कर देती है।'' 'प्यारी-सी मुसकान' निर्मला चिढ़कर बुदबुदाती, ''हुँह...दाँत निकाले रहती है और लोग कहते हैं–प्यारी-सी मुसकान।''

लेकिन निर्मला मन-ही-मन यह तो मानती है कि सयाल की मुसकान बहुत प्यारी है। जब वह हँसती है तो उसका अंडाकार चेहरा खिल उठता है। आँखों में चमक आ जाती है। उसकी छोटी, पतली नाक ऊपर को उठ जाती है और उसके गालों में दो छोटे-छोटे गड्ढे दिखने लगते हैं।

सयाल की मुसकान तो मोहक थी, किंतु उसकी पोशाक उतनी आकर्षक न थी। **पैबंद** लगे कपड़ों से उसकी गरीबी झाँकती थी। उसके हाथ में पड़ी चूड़ियाँ भी उतनी सुंदर न थीं, जितनी निर्मला की चूड़ियाँ थीं। यह भी सच है कि गुजरात के उस छोटे-से आदिवासी गाँव बरटाड में इतनी सुंदर गले की माला किसी और के पास न थी जैसी निर्मला के पास थी।

शब्दार्थ: पैबंद–दूसरे कपड़े के टुकड़े

सयाल बुद्धि और **विवेक** में भी निर्मला से आगे है। निर्मला इसलिए भी सयाल से चिढ़ती है। सयाल को स्कूल जाना अच्छा लगता है और निर्मला हरदम इस मौके की ताक में रहती है कि स्कूल छोड़कर खेतों में जाने को मिल जाए। ''निर्मला..निर्मला!'' झोपड़ी के अंदर से उसकी माँ पुकारती है।

''अरे आठ बज गए, धूप चढ़ आई और **मवेशियों** को चराने ले जाने वाला कोई नहीं है। जा बेटा, जा। आज तू चरा ला। स्कूल किसी और दिन चली जाना।''

निर्मला खुशी से उछल पड़ी और मवेशियों को हाँकते हुए गाँव के धूल भरे रास्ते पर चल पड़ी।

कुछ **फर्लांग** की दूरी पार करने के बाद निर्मला जंगल की ओर मुड़ गई। वहाँ कुछ ही दूरी पर थोड़ी-सी खुली हुई जगह थी, जहाँ मवेशी आराम से चराए जा सकते थे।

अचानक ही वह ज़ोर से गुस्सा होकर बड़बड़ाई। कारण यह था कि जिस बरगद के पेड़ की छाया में उसका अड्डा था वहाँ आज कोई बैठा था। पेड़ के तने से टिकी पीठ देखकर ही वह समझ गई कि वह सयाल है।

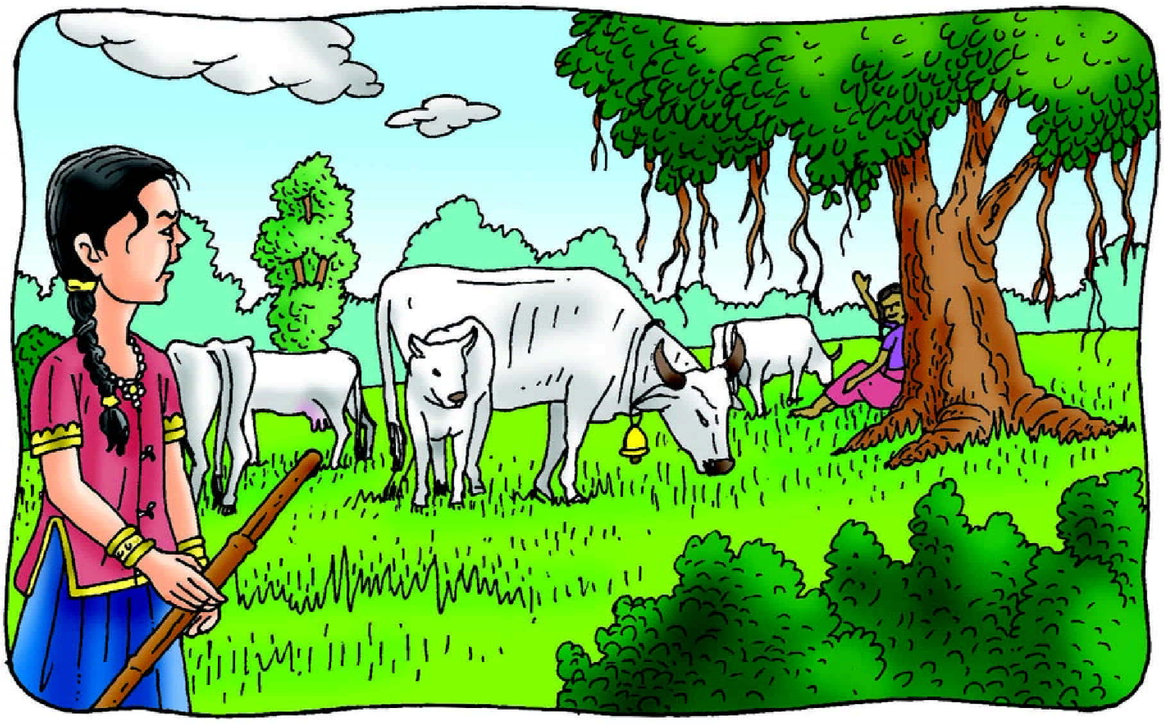

गायों की घंटियों की आवाज़ सुनकर सयाल ने इधर-उधर देखा। वह निर्मला को देखकर बहुत खुश हुई और हाथ हिलाकर उसे बुलाने लगी—''ए निर्मला...इधर आ जा...छाया में।'' लेकिन सयाल की **उपेक्षा करती** हुई निर्मला थोड़ी आगे निकल गई।

निर्मला के मवेशी नरम घास खोजने के लिए बिखर गए। निर्मला इधर-उधर देखकर सोचने लगी कि वह किधर जाकर बैठे। आखिर उसने एक झाड़ी देखी, जिसकी छाया में वह बैठ सकती थी। वह घुटनों के बराबर ऊँची घास के बीच में से होती हुई वहाँ पहुँच गई।

शब्दार्थः विवेक—भले-बुरे की समझ; **मवेशी**—गाय, बैल, आदि; **फर्लांग**—दो सौ बीस गज; **उपेक्षा करना**—ध्यान न देना

निर्मला को एक बार फिर सयाल ने पुकारा, लेकिन निर्मला ने उस ओर कोई ध्यान न दिया।

'फुस्स...स...स...';

अचानक यह फुफकार सुनकर निर्मला के **प्राण सूख गए**। उसने मुड़कर देखा—एक दैत्याकार अजगर साँप उसकी ओर जलती आँखों से घूर रहा था। वह बारह फ़ीट से भी ज़्यादा लंबा था। वह निर्मला के इतने नज़दीक था कि वह वहाँ से भागने का साहस भी न कर सकी। वह चीखना चाहती थी, पर भय के कारण उसकी **घिग्घी बँध** गई थी।

अचानक साँप उछला। वह बड़े गुस्से से फिर फुफकारा। निर्मला ने अपनी ज़िंदगी में ऐसा भयानक दृश्य न कभी देखा था न कभी सुना था। अचानक अजगर का सिर आगे को बढ़ा और साथ-ही-साथ उसने पूँछ भी उठाई। पलक झपकते ही निर्मला का घुटना उसकी कुंडली में फँस चुका था और उसने अपने जबड़ों से निर्मला का पंजा पकड़ लिया था। साँप की सख़्त पकड़ से निर्मला को लगा कि उसकी हड्डियाँ चूर-चूर हो जाएँगी। उसे लगा कि अब वह मर जाएगी। वह एकदम से चिल्ला पड़ी—''बचाओ...बचाओ...।''

निर्मला ने साँप को झटकारने की कोशिश की, लेकिन उसे छूने की भी हिम्मत न कर सकी। साँप उसके पैर में कुंडली मारकर लिपटा हुआ था। अचानक साँप पर किसी ने लाठी से वार किया।

यह हमला सयाल ने किया था। साँप गुस्से से तिलमिला उठा। फिर भी उसने अपनी पकड़ न छोड़ी।

''सयाल...सयाल...मैं मर रही हूँ।''

''कुछ नहीं होगा। घबराओ नहीं,'' सयाल चिल्लाई और बड़ी **निर्भीकता** से साँप की कुंडली खोलने की कोशिश में लग गई।

शब्दार्थः प्राण सूख जाना—बहुत डर जाना; **घिग्घी बँधना**—गले से आवाज़ न निकालना (डर के कारण); **निर्भीकता**—निडरता, भयहीनता

''मुझे इसका ज़हर चढ़ रहा है,'' निर्मला चिल्लाई।

''अरे यह अजगर है। इसके ज़हर नहीं होता,'' सयाल बोली।

''लेकिन मैं तो हिल ही नहीं सकती।''

''तुम डरी हुई हो। घबराओ मत...थोड़ा शांत रहो। मैं तुम्हारी मदद के लिए हूँ न।''

अब तक लाठी से काम नहीं बन रहा था, इसलिए सयाल ने अपने हाथों से इस दैत्य से लड़ने का निश्चय किया। उसने अजगर का मुँह पकड़ा और उसके जबड़े खोलने लगी।

निर्मला ने भी अपनी पीड़ा को सहने के लिए साहस बटोरा। वह **टकटकी लगाकर** सयाल को देख रही थी। सयाल ने दाँतों को भींच रखा था और अजगर के मुँह में हाथ डालकर उसके जबड़े फैलाने की पूरी कोशिश कर रही थी। उसके माथे से पसीना बह रहा था और हाथों से खून। निर्मला एक क्षण के लिए समझ ही नहीं पाई कि खून उसके पैर से बह रहा है या सयाल के हाथों से। साधारण-सी दिखने वाली सयाल की बहादुरी देखकर निर्मला हैरान थी। सयाल ने आखिर जबड़े फाड़ दिए। साँप गुस्से से बहुत छटपटाया।

एक क्षण के लिए लगा कि उसकी ताकत के सामने शायद सयाल न टिक सके। लेकिन जबड़े खुलते ही सयाल चिल्लाई, ''अपना पैर निकाल, निर्मला...झटका दे...झटका दे।'' उसने अजगर के जबड़ों को पूरी तरह खोले रखा। निर्मला ने उसके जबड़े से पैर तो मुक्त किया लेकिन कुंडली अभी भी कसी हुई थी। आखिर दोनों ने ज़ोर लगाया

शब्दार्थः टकटकी लगाना–लगातार एक तरफ़ देखना

तो कुंडली का दबाव कम हुआ। सयाल ने इतनी ज़ोर से झटका दिया कि निर्मला साँप की कुंडली से छूटकर दूर जा गिरी। अब साँप का शिकार सयाल थी।

सयाल ने निर्मला को भाग जाने के लिए कहा। लेकिन वह ऐसा न कर सकी। वह सयाल की मदद करना चाहती थी। उसने देखा अजगर सयाल पर बार-बार हमला कर रहा है और सयाल बड़े साहस से उसका सामना कर रही है।

निर्मला ने एक क्षण के लिए सोचा कि ऐसी साहसी और वीर सयाल से मैं व्यर्थ ही चिढ़ती रही। आज यह न होती तो यह दैत्य मुझे खा जाता और अब इस दैत्य से मैं सयाल को नहीं बचा पा रही हूँ।

सयाल पूरी ताकत से अजगर के मुँह को पकड़कर पीछे हटाने में लगी थी। सयाल के काँपते कंधे बता रहे थे कि अब उसकी शक्ति **शिथिल पड़** रही है।

साँप बड़ी ज़ोर से फुफकारा। उसने एक बार फिर अपना सिर बढ़ाया और सयाल की छाती के पास आ गया। सयाल फिर उसके जबड़े पकड़कर उसे पीछे हटाने लगी। उसने एक बार फिर निर्मला को भाग जाने के लिए कहा। तभी निर्मला ने देखा कि अजगर सयाल को गिराकर उसके ऊपर पड़ा है। एक क्षण के लिए सयाल बिलकुल जड़ हो गई।

बहुत भयानक दृश्य था। साँप सयाल को निगलना चाहता था और सयाल हिम्मत से उसका मुकाबला कर रही थी। उसकी आवाज़ कमज़ोर हो रही थी। निर्मला ने सयाल की धीमी आवाज़ सुनी...

''भाग जा निर्मला।'' लेकिन निर्मला अब कैसे भागती, अपनी सहेली को मौत के मुँह में डालकर भाग जाती?

तभी उसने देखा कि सयाल में अद्भुत शक्ति आ गई है। उसने एक बार में उस दैत्य को झटककर दूर फेंक दिया

शब्दार्थः शिथिल पड़ना–ढीला पड़ना, कमज़ोर पड़ना

और बिजली की तरह भाग खड़ी हुई।

''भाग चल निर्मला...मवेशियों को भी ले चल...''

अब निर्मला भी भागने लगी। उसने पीछे मुड़कर न तो देखा और न देखने का साहस कर सकी। बस भागती रही ...भागती रही। कुछ देर बाद पीछे-पीछे सयाल भी आ गई और निर्मला का हाथ पकड़कर दौड़ने लगी। वे दौड़ती रहीं और वहाँ जाकर रुकीं जहाँ मवेशी शांति से चर रहे थे और कोई खतरा न था।

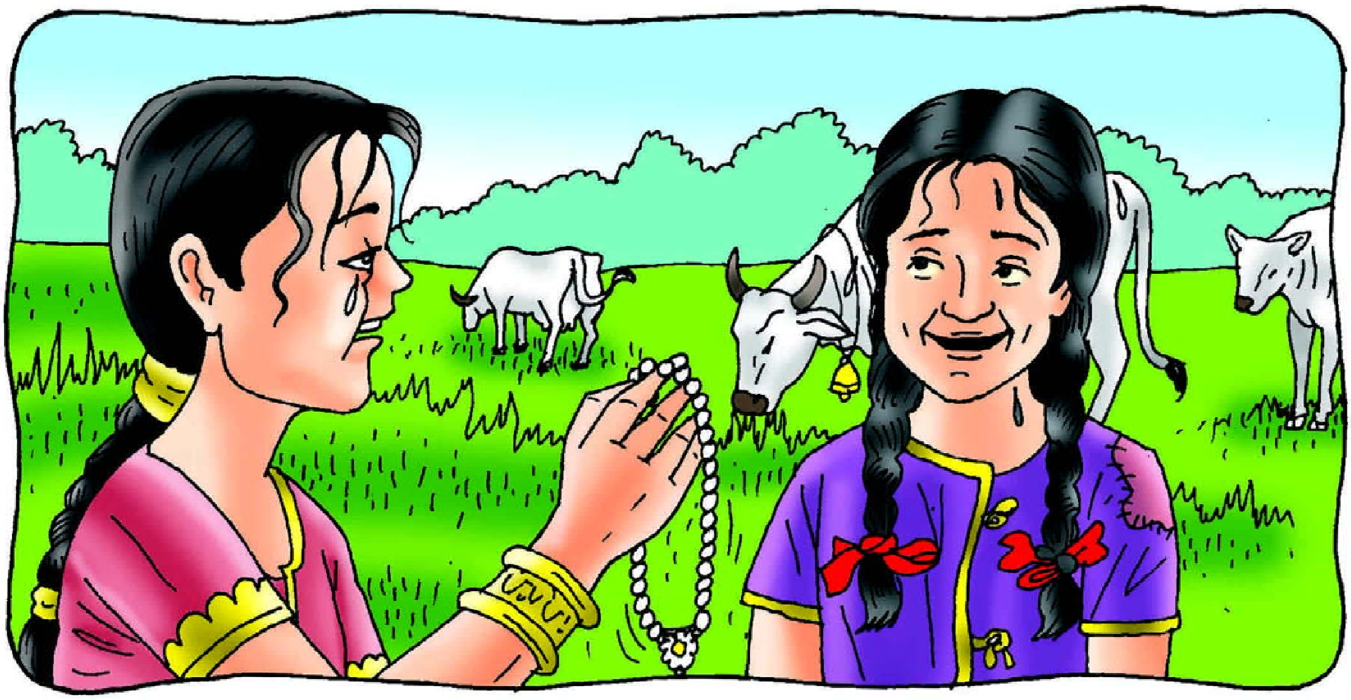

दोनों बड़ी देर तक हाँफ़ती रहीं और बिना कुछ बोले एक-दूसरे को देखती रहीं।

अचानक निर्मला की आँखों से आँसू बहने लगे और उसके होंठ थरथरा उठे। उसने सयाल से कहा कि अगर वह न होती तो साँप उसे मार डालता। सयाल ने उसे धैर्य बँधाया और कहा कि सब ठीक हो जाएगा।

निर्मला ने सयाल को इस तरह देखा जैसे आज पहली बार वह उसे पहचान पाई है।

निर्मला ने कहा, ''सयाल! मैं तुम्हें अपनी मोतियों की माला भेंट में देना चाहती हूँ।''

''लेकिन क्यों? अगर तुम्हारी जगह मैं होती तो तुम भी तो मेरी मदद करतीं।''

निर्मला ने शर्म से अपना सिर झुका लिया। उसने अपने गले से माला उतारकर सयाल को देते हुए कहा, ''तुम इसे ले लो। यह तुम्हारे इस स्नेह की याद दिलाएगी।''

सयाल बड़ी देर तक निर्मला की आँखों में देखती रही। फिर उसके थके पीले चेहरे पर अचानक एक सुखद मुसकान फैल गई और वह भाव भरे स्वर में बोली, ''लूँगी, ज़रूर लूँगी।''

–सिगरुन श्रीवास्तव

अभ्यास

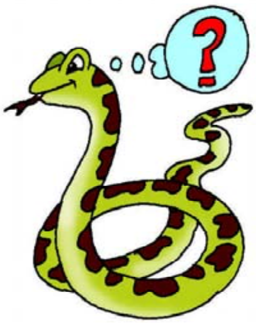

पाठ में से

1. सयाल को सब क्यों पसंद करते थे?
2. साँप द्वारा पकड़े जाने पर निर्मला को क्या लगा?
3. साँप पर हमला किसने और कैसे किया?
4. निर्मला ने स्वयं को बचते देख और सयाल को अजगर का शिकार करते देख क्या सोचा?
5. **रिक्त स्थान भरिए–**

   (क) सयाल के पिता का नाम .... था।

   (ख) कुछ फर्लांग की दूरी पार करने के बाद निर्मला .... की ओर मुड़ गई।

   (ग) निर्मला ने भी अपनी पीड़ा को सहने के लिए .... बटोरा।

   (घ) एक क्षण के लिए सयाल बिलकुल .... हो गई।

   (ङ) निर्मला ने सयाल से कहा कि अगर वह न होती तो साँप उसे .... डालता।
6. **पाठ के आधार पर नीचे कुछ वाक्य दिए गए हैं। कहानी की घटनाओं के अनुसार उनके आगे क्रम संख्या लिखिए–**

   ☐ अचानक यह फुफकार सुनकर निर्मला के प्राण सूख गए।

   ☐ निर्मला खुशी से उछल पड़ी और मवेशियों को हाँकते हुए गाँव के धूल भरे रास्ते पर चल पड़ी।

   ☐ अचानक साँप पर किसी ने लाठी से वार किया।

   ☐ साँप सयाल को निगलना चाहता था।

   ☐ गायों की घंटियों की आवाज़ सुनकर सयाल ने इधर-उधर देखा।

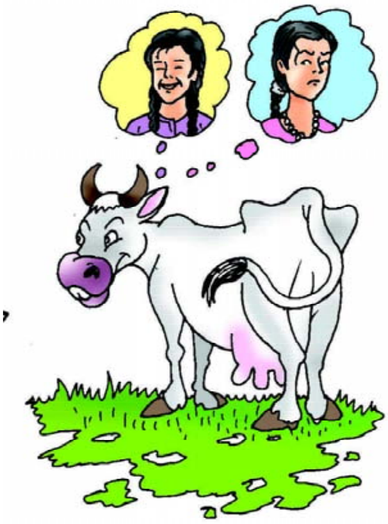

बातचीत के लिए

1. सयाल के काँपते कंधे क्या बता रहे थे?
2. सयाल ने निर्मला को भाग जाने के लिए क्यों कहा?
3. आपको स्कूल में क्या-क्या अच्छा लगता है और क्यों?

अनुमान और कल्पना

1. सयाल निर्मला की सहायता न करती तो क्या होता?
2. निर्मला को खेतों में जाना क्यों अच्छा लगता होगा?
3. यदि आप निर्मला की तरह किसी मुसीबत में फँस जाएँगे, तो आप क्या करेंगे?

भाषा की बात

1. पाठ में से नीचे दिए गए शब्दों के समान अर्थ वाले शब्द ढूँढकर लिखिए–

(क) राक्षस – .... (ग) अश्रु – ....

(ख) साहस – .... (घ) विचित्र – ....

2. नीचे लिखे विशेषण शब्दों को शब्द-कोश के क्रमानुसार लिखिए–

चमक, वीर, छोटी, पतली, मोहक, अंडाकार, ऊँची, एक, भयानक, पहली।

....	....	....	....	....
1	2	3	4	5
....	....	....	....	....
6	7	8	9	10

3. पाठ में आए कोई तीन मुहावरे छाँटकर लिखिए व उनके अर्थ भी लिखिए–

(क) **मुहावरा** – ....

अर्थ – ....

(ख) **मुहावरा** – ....

अर्थ – ....

(ग) **मुहावरा** – ....

अर्थ – ....

जीवन मूल्य

- निर्मला और सयाल दोनों मित्र थीं।
  1. क्या सयाल ने निर्मला से मित्रता निभाई? कैसे?
  2. आप अपने मित्रों में कौन-कौन से गुण देखना चाहेंगे और क्यों?

कुछ करने के लिए

1. अभिनय द्वारा अपने चेहरे से दिए गए भावों को अभिव्यक्त कीजिए–
   (क) गुस्से से छटपटाना
   (ख) टकटकी लगाकर देखना
   (ग) भयभीत होना
   (घ) कुढ़ना
   (ङ) रुआँसा होना
   (च) खुश होना
2. अगर निर्मला पर हाथी ने हमला किया होता तो सयाल उसे कैसे बचाती? अपनी कल्पना से कहानी बनाइए और कक्षा में सुनाइए।